महामुनि पाणिनि

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

भूमिका

विश्व की भाषाओं में संस्कृत की सर्वप्राचीनता के साथ संस्कृत व्याकरण का महत्त्व भी सर्वमान्य है। व्याकरणशास्त्र के इतिहास में संस्कृतभाषा को परिष्कृत करने में पाणिनीय व्याकरण का नाम अविस्मरणीय रहेगा। पाणिनि को यदि विश्व का सबसे बड़ा वैयाकरण माना जाए तो यह कोई अत्युक्ति नहीं होगी। अनेकों शताब्दियाँ व्यतीत हो गयीं, फिर भी पाणिनि के प्रकाश में आज भी देववाणी का स्वरूप जनसाधारण के हृदय को आन्दोलित करता चला आ रहा है।वस्तुतः पाणिनि संस्कृत में व्याकरणशास्त्र के सबसे बड़े प्रतिष्ठाता और नियामक आचार्य हैं। भारतीय एवं पाश्चात्य भाषाशास्त्री इस विषय में एकमत हैं कि पाणिनि ने ही सर्वप्रथम भाषाशास्त्र की सर्वाङ्गीण व्याख्या की है। भाषाशास्त्र के इतिहास में इनका नाम मूर्धन्य है। उनके उत्तरवर्ती जितने भी व्याकरण सम्प्रदायों का जन्म हुआ उनमें पाणिनि को बड़े आदर के साथ स्मरण किया गया है। उन्होंने संस्कृतभाषा का जितना सूक्ष्म विवेचन किया है, उतना विश्व की किसी भाषा का व्यापक अध्ययन नहीं हुआ है। पाणिनि का व्याकरण पाश्चात्य भाषाशास्त्रियों के लिए भी आदर्श ग्रन्थ रहा है। अतएव सभी मूर्धन्य भाषाशास्त्रियों ने पाणिनि के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है।पाणिनि ने भाषाशास्त्र के विभिन्न अंगों- ध्वनि विज्ञान, पदविज्ञान, वाक्यविज्ञान, अर्थविज्ञान और तुलनात्मक व्याकरण को बहुत आगे बढ़ाया है। पाणिनि भारतीय व्याकरण परम्परा के आदि आचार्य तो नहीं हैं परन्तु वे इस परम्परा के उत्कर्ष शिखर हैं।

जीवन परिचय

पं० युधिष्ठिर मीमांसक ने पाणिनि के पिता की संज्ञा 'पणिन्' बतलायी है। इनकी माता का नाम दाक्षी था। पाणिनि के गुरु का नाम वर्षाचार्य था। काव्यमीमांसा के अनुसार तक्षशिला इनका विद्या-

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

अध्ययन केन्द्र था। वि०पू० 8 वीं शताब्दी के आस-पास तक्षशिला विश्वविद्यालय भारतवर्ष का प्रमुख विद्याकेन्द्र था। इनका जन्मस्थान 'शलातुर' नामक ग्राम रहा है।

पाणिनि का समय

पाणिनि के आविर्भावकाल के विषय में बड़ा मतभेद है। स्थूल रूप से पाणिनि का काल ई०पू० आठवीं शताब्दी से ई०पू० चौथी शताब्दी तक कहीं बीच में स्वीकार किया जाता है। फिर भी इन्हें आठवी-सातवीं शताब्दी का मानना ही युक्तियुक्त प्रतीत होता है। वैसे संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास लिखनेवाले परम यशस्वी विद्वान् युधिष्ठिर मीमांसक ने पाणिनि का काल तीन हजार वर्ष पूर्व माना है, तथा अपने प्रबल तर्कों द्वारा यह सिद्ध भी कर दिया है।

पाणिनि की रचनाएं

पाणिनि की विश्वविश्रुत रचना 'शब्दानुशासन' है जिसे अष्टाध्यायी के नाम से भी जाना जाता है। यह व्याकरणशास्त्र का एक सुपरिचित एवं सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त नाम है। यह इतना उत्तम और सर्वांगसुंदर है कि विगत 2500 वर्षों से यह संस्कृत व्याकरण का प्रतिनिधि ग्रन्थ बना हुआ है। अष्टाध्यायी महामुनि पाणिनि की असाधारण प्रतिभा का निदर्शन है। अष्टाध्यायी का अपर नाम पाणिनीयाष्टक भी है। यह सूत्रपद्धति लिखा गया है। सूत्र का लक्षण इस प्रकार बताया गया है-

अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद् विश्वतो मुखम्।
अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः।।

अर्थात् जिसमें थोड़े अक्षर हों, जो सन्देह रहित हों और जिसमें तत्त्व कहा गया हो, व्यर्थ की बातें न कही गयी हों तथा प्रशस्त कथन हो उसे सूत्रविदों ने सूत्र कहा है।

संस्कृतभाषा के परिष्कृत एवं सुदृढ स्वरूप का मानदण्ड अष्टाध्यायी ही है। इसमें लौकिक एवं वैदिक व्याकरण का साथ-साथ विवेचन किया गया है। पाणिनि की अष्टाध्यायी में आठ अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं। इन आठों अध्यायों में सूत्रों की संख्या 3995 है जिनमें 14 प्रत्याहार सूत्र भी सम्मिलित हैं। समग्र व्याकरण को संक्षेप में प्रस्तुत करने हेतु पाणिनि ने अष्टाध्यायी की रचना सूत्रों में की। अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय में पाणिनीय व्याकरण में काम आनेवाली संज्ञाएं तथा परिभाषाएं

दी गई हैं। द्वितीय अध्याय में समास तथा कारक के नियम हैं। तृतीय अध्याय में धातुओं से होने वाले प्रत्यय और चतुर्थ, पञ्चम अध्याय में प्रातिपदिकों से होने वाले प्रत्यय दिए गए हैं। षष्ठ तथा सप्तम अध्याय में वैदिक भाषा में प्रयुक्त स्वरों का तथा शब्दों में होने वाले ध्वनिविकारों का तथा अन्तिम अष्टम अध्याय में पदों का विवेचन हुआ है।

पाणनीय व्याकरण अपने नीति-नियमों के कारण इतनी व्यापक ख्याति को अर्जित कर सका, जिसके आधार पर कहा जाने लगा कि भारतीय व्याकरण में ही सर्वप्रथम शब्दों का विवेचन हुआ, प्रकृति और प्रत्यय का अन्तर पहचाना गया, प्रत्ययों का कार्यनिर्धारण निश्चित किया गया, सर्वाङ्गीण अतिशुद्ध व्याकरणपद्धति का निर्माण हुआ। भारत की भाषागत परम्परा एवं साहित्य के क्षेत्र में पाणिनि व्याकरण ने एक सर्वथा नये युग का अनुवर्तन किया।

महामुनि पाणिनि ने अष्टाध्यायी के अतिरिक्त 'गणपाठ', 'धातुपाठ', ‘उणादिसूत्र’ और 'लिंगानुशासन' नामक पुस्तकों की भी रचना की है। इन्हें अष्टाध्यायी के परिशिष्ट के रूप में भी स्वीकार किया जाता है। पाणिनीयशिक्षा नामक ग्रन्थ का उल्लेख भी प्राप्त होता है। इनके अतिरिक्त दो अन्य ग्रन्थ पाणिनि के नाम से मिलते हैं परन्तु इनकी प्रमाणिकता सन्दिग्ध है। ये ग्रन्थ हैं 'जांबवतीविजय' या ‘पातालविजय’ और द्विरूपकोष। 'जांबवतीविजय' एक महाकाव्य है जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा पाताल में जाम्बवन्त को परास्त करके उसकी पुत्री से विवाह करने की कथा का वर्णन है।पाणिनि का काव्यवैभव कालिदासादि अग्रगण्य कवियों के काव्य से अधिक नहीं तो कथमपि अल्प भी नहीं कहा जा सकता। उनका काव्यप्रासाद माधुर्य गुण एवं वैदर्भी शैली से मण्डित है। काव्यमीमांसाकार ने पाणिनिरचित महाकाव्य 'जांबवतीविजय' का उल्लेख किया है-

नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह।

आदौ व्याकरणं काव्यमनुजाम्बवतीजयम्।।

अर्थात् उस पाणिनि मुनि को नमस्कार है जिनसे प्रथम व्याकरण शास्त्र तत्पश्चात् जाम्बवतीविजयम् नामक काव्य आविर्भूत हुआ।

कथासरित्सागर में इनका ‘सुबन्धु’ आदि के साथ उल्लेख कर उत्कृष्ट काव्यकार कहा गया है।

पाणिनि ने अपने शब्द समाम्नाय में भूतकालिक तथा समकालिक शब्दसामग्री का अतिक्रमण कर एक नवीन मापदण्ड उपस्थापित किया है।

पाणिनि ने संस्कृतभाषा को स्थायित्व प्रदान करने का जो कार्य किया, वह अलौकिक तथा अद्भुत है।

पाणिनि का योगदान

माहेश्वरसूत्र-

माहेश्वरसूत्र को संस्कृत व्याकरण का आधार माना जाता है। पाणिनि ने संस्कृत भाषा के तत्कालीन स्वरूप को परिष्कृत एवं नियमित करने के उद्देश्य से माहेश्वरसूत्रों की सुदृढ संकल्पना की। माहेश्वर सूत्रों की कुल संख्या 14 है। इन सूत्रों में संस्कृत की पूरी वर्णमाला विशिष्ट क्रम में दी गई है। इनका उल्लेख अग्रलिखित है **१. अइउण्। २. ऋलृक्। ३. एओङ्। ४. ऐऔच्। ५. हयवरट्। ६. लण्। ७. ञमङणनम्। ८. झभञ्। ९. घढधष्। १०. जबगडदश्। ११. खफछठथचटतव्। १२. कपय्। १३. शषसर्। १४. हल्।** ध्वनिविज्ञान की दृष्टि से यह विभाजन अत्यन्त वैज्ञानिक है। माहेश्वर सूत्रों में वैदिक और संस्कृतभाषा का सम्पूर्ण वर्ण समाम्नाय सन्निविष्ट है। संसार की किसी भाषा के वर्णसमाम्नाय का ऐसा वैज्ञानिक प्रस्तवन नहीं पाया जाता। स्थान, करण और प्रयत्न के अनुसार ध्वनियों (वर्णों) को वर्गीकृत करके पाणिनि ने इन चौदह सूत्रों में प्रस्तुत कर दिया है। ऐसी प्रसिद्धि है कि ये चौदह सूत्र वर्षों तपस्या करने के पश्चात् भगवान् महेश्वर से उन्हें प्राप्त हुए थे, इसीलिए उन्हें माहेश्वर सूत्र कहा जाता है।

प्रत्याहार-

14 माहेश्वरसूत्रों से अनेक प्रत्याहार बनते हैं। अधिक-से-अधिक वर्णों को संक्षिप्त करने की रीति को प्रत्याहार कहते हैं- प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते अनेके वर्णाः यया सा रीतिः कथ्यते प्रत्याहारः। ये प्रत्याहार माहेश्वर सूत्रों से ही बनाये जाते हैं। इनकी कुल संख्या 42 है। इन प्रत्याहारों की रचना की विधि बड़ी सरल है। इन प्रत्याहारों का प्रथम वर्ण माहेश्वर सूत्र के बीच का कोई है तथा अन्तिम हल्-चिह्नयुक्त इत्संज्ञक वर्ण। कतिपय महत्त्वपूर्ण प्रत्याहारों का उल्लेख आगे किया जा रहा है-

इक्-इ, उ, ऋ, लृ

यण्-य्, व्, र्, ल्

अच्- समस्त स्वर

हल्-समस्त व्यञ्जन

अल्-समस्त वर्ण

सन्धिनियम-

पाणिनि ने यथास्थान सन्धि के नियमों से सम्बन्धित सूत्रों को उपन्यनस्त किया है। इनके द्वारा ध्वनि विज्ञान के वर्ण परिवर्तन सम्बन्धी सिद्धान्तों का विस्तृत विवेचन किया जा सकता है। ध्वनियों के सन्निकर्ष (सामीप्य) के कारण किस प्रकार आगम, विकार, लोप आदि होते हैं, इसका पाणिनि ने जो निरूपण किया है वह केवल संस्कृत भाषा के लिए ही लागू नहीं होता, वह इतना व्यापक और वैज्ञानिक है कि किसी भी भाषा पर घटित किए जा सकते हैं। कतिपय सन्धिसूत्रों का सोदाहरण उल्लेख आगे किया जा रहा है-

अकः सवर्णे दीर्घः-

लाभ+अलाभ=लाभालाभ, दिव्य+आसन=दिव्यासन, नदी+ईशः=नदीशः, मधु+उत्सवः=मधूत्सवः

आद् गुणः-

उप+इन्द्रः=उपेन्द्रः,गङ्गा+उदकम्= गङ्गोदकम्

इको यणचि-

प्रति+उपकारः=प्रत्युपकारः, सु+आगतम्=स्वागतम्, मातृ + आदेशः=मात्रादेशः

एचोऽयवायावः-

ने+अयनम्=नयनम्, विष्णो+ए=विष्णवे, चै+अकः=चायकः

छे च-

शिव+छाया=शिवच्छाया

स्तोः श्चुना श्चुः-

रामस्+शेते=रामश्शेते

पदविज्ञान-

महामुनि पाणिनि ने पदों का द्विविध विभाजन किया है-सुबन्त और तिङन्त।उन्होंने कहा-सुप्तिङन्तं पदम्। जिसके अन्त में सुप् प्रत्यय लगे हों उसे सुबन्त तथा तिङ् प्रत्यय लगे हों तो उसे तिङन्त कहते हैं। विश्व में जितने पदविभाजन हुए हैं उसमें यह सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित है।

पारिभाषिक शब्दों का निर्माण-

अपने विवेचन को संक्षिप्त और वैज्ञानिक बनाने के लिए महामुनि पाणिनि ने अनेक पारिभाषिक शब्दों की कल्पना की। कुछ पारिभाषिक शब्दों का उल्लेख आगे किया जा रहा है-

वृद्धि-वृद्धिरादैच्

गुण-अदेङ्गुणः

अनुनासिक-मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः

सवर्ण- तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्

प्रगृह्य-ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्

घ-तरप्तमपौ घः

सर्वनाम-सर्वादीनि सर्वनामानि

सर्वनामस्थान-शि सर्वनामस्थानम्

सम्प्रसारण- इग्यणः सम्प्रसारणम्

लोप- अदर्शनं लोपः

टि- अचोऽन्त्यादि टि

तुलनात्मक भाषाविज्ञान की नींव-

महामुनि पाणिनि ने लौकिक एवं वैदिक संस्कृत का तुलनात्मक अध्ययन करके तुलनात्मक भाषाविज्ञान को जन्म दिया। वस्तुतः अपनी परम्परा में अष्टाध्यायी संस्कृत का एकमात्र व्याकरण है,

जिसमें वैदिक और लौकिक संस्कृत का विश्लेषण किया गया है। साथ ही प्राचाम्, उदीचाम् आदि भेदों के उल्लेख से प्रान्तीय विभाषाओं का भी तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

व्यावहारिक वस्तुओं का नामकरण-

पाणिनि ने व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं के नाम सिद्ध करने के लिए सूत्रों का निर्माण किया है। जैसे-प्रास्थिक, द्रौणिक, खारीक, गौपुच्छिक, बाहुका, लाक्षिक।

सूत्रों का वैज्ञानिक विभाजन-

महामुनि पाणिनि बड़े वैज्ञानिक रीति से सूत्रों का विभाजन किया है जिसका उल्लेख आगे किया जा रहा है।

संज्ञासूत्र- संज्ञिसम्बन्धबोधकं संज्ञासूत्रम्। यथा अदेङ् गुणः।

परिभाषासूत्र- अव्यवस्थायां व्यवस्थासम्पादकसूत्रं परिभाषासूत्रम्। यथा षष्ठी स्थाने योगा।

विधिसूत्र- आदेशागमादिविधायकसूत्रं विधिसूत्रम्। यथा इको यणचि।

नियमसूत्र- सिद्धे सति आरभ्यमाणो विधिर्नियमाय कल्पते। यथा धातोस्तन्निमित्तस्यैव।

अधिकारसूत्र- स्वदेशे फलशून्यत्वे सति उत्तरोत्तरफलजनकत्वम्। यथा धातोः।

निषेधसूत्र-पूर्वसूत्रकार्यनिषेधकसूत्रं निषेधसूत्रम्। यथा नाज्झलौ।

प्रकृति-प्रत्यय विभाग-

पाणिनि ने प्रकृति और प्रत्यय के विभाग द्वारा सभी शब्दों की व्युत्पत्ति का वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किया है। पाणिनि ने यहाँ तक कहा है कि जहाँ शब्द का प्रकृति-प्रत्यय-विभाग स्पष्ट नहीं मालूम पड़ता वहाँ भी सार्थक मूल ढूँढ़कर काल्पनिक प्रत्यय के योग द्वारा शब्द निष्पन्न कर लिया जाता है। उणादि सूत्रों का यही निष्कर्ष है। उणादि प्रकरण में वैसे शब्दों की व्युत्पत्ति प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है जो व्याकरण के सामान्य नियम से व्युत्पन्न नहीं होते। पाणिनि ने धातु और प्रत्यय के योग से कृदन्त तथा प्रातिपदिक और प्रत्यय के योग से तद्धित, इन दो प्रकार के शब्दों का विभाजन किया। भारतीय भाषाशास्त्रियों ने ही नहीं, अपितु अशेष विश्व के भाषाशास्त्रमर्मज्ञों ने महामुनि पाणिनि की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। पाणिनि के उत्तरकालीन वैयाकरणों ने उनके लिए भगवान्, आचार्य जैसे

विशेषणों का प्रयोग किया है जो उनके कार्य की महत्ता की ओर संकेत करता है। पाणिनि की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए युधिष्ठिर मीमांसक लिखते हैं कि पाणिनीय शब्दानुशासन का सूक्ष्म पर्यवेक्षण करने से विदित होता है कि पाणिनि न केवल शब्दशास्त्र के परिज्ञाता थे, अपितु समस्त प्राचीन वाङ्मय में उनकी अप्रतिहत गति थी। भारतीय वैयाकरणों में महामुनि पाणिनि को प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाता है। वस्तुतः संस्कृत में व्याकरणशास्त्र के सबसे बड़े प्रतिष्ठाता तथा नियामक आचार्य हैं।

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी